Proceedings of the National Seminar on Natural Resource Management and Environmental Issues

National Seminar on Natural Resource Management and Environmental Issues

NRMEI-2011

Sponsored by:

University Grants Commission, CRO, Bhopal

Ministry of Earth Sciences, Govt. of India, New Delhi

Department of Science & Technology, Govt. of Rajasthan, Jaipur

Dr. M. D. Gora
Patron

Dr. M. M. Sheikh
Editor

Dr. M. A. Khan
Co-Editor

DEPARTMENT OF GEOGRAPHY

GOVT. LOHIA P. G. COLLEGE

CHURU-331001 (RAJ.)

Scanned by CamScanner

ISBN 978-81-921231-1-0

Proceedings of the National Seminar on Natural Resource Management and Environmental Issues

24-25 September, 2011

Sponsored by:

University Grants Commission, CRO, Bhopal
Ministry of Earth Sciences, Govt. of India, New Delhi
Department of Science & Technology, Govt. of Rajasthan, Jaipur

Dr. M. D. Gora
Patron

Dr. M. M. Sheikh
Editor
Dr. M. A. Khan
Co-Editor

DEPARTMENT OF GEOGRAPHY
GOVT. LOHIA P. G. COLLEGE
CHURU-331001 (RAJ.)

Scanned by CamScanner

Proceedings of the National Seminar on
Natural Resource Management and Environmental Issues

ISBN 978-81-921231-1-0

Year - 2012

Published by:
The Principal
Govt. Lohia P. G. College
Churu-331001 (Raj.)

Printed by:
Bhagwati Offset Printers
Churu-331001 (Raj.)

Scanned by CamScanner

S. No.	Paper Title	Author Name	Page No.
53.	कन्हैयालाल सेठिया के काव्य में पर्यावरण चेतना	डॉ. गीता सामौर डॉ. जगजीत सिंह कविया	255
54.	पर्यावरण संरक्षण में पंचायती राज संस्थाओं की भूमिका	डॉ. इकबाल खान	259
55.	पर्यावरण संरक्षण में पंचायतीराज संस्थाओं की भूमिका	डॉ. जगजीतसिंह कविया डॉ. गीता सामौर	262
56.	ऋग्वेद के मरुत् सूक्त में पर्यावरण संरक्षण	डॉ. मूलचन्द	266
57.	प्रकाश प्रदूषण : एक धीमा जहर	कमला सोनी	272
58.	राजस्थान में भूमिगत जल संसाधन प्रंबधनः समस्या व सुझाव	डॉ. वीरेन्द्र कुमार सैनी मामराज कुमावत	274
59.	अलवर जिले में कृषि का आधुनिकीकरण का पर्यावरण पर प्रभाव एवं पारिस्थितिकी विश्लेषण	डॉ. आर. के. मोर्य	279
60.	पर्यावरणीय शिक्षा	डॉ. सरिता शर्मा	281
61.	पर्यावरण प्रदूषणः कम्प्यूटरीय विकिरण प्रदूषण	कैलाश पारीक चन्द्रशेखर भारती	285
62.	पंचायतीराज व्यवस्था में महिला प्रतिनिधियों की सहभागिताः यक्ष प्रश्न	डॉ. जनक सिंह मीणा वसीम रजा	287
63.	भूमि प्रदूषण : सरक्षण एवं नियंत्रण	विमल कुमार कोली	290
64.	जलवायु परिवर्तन एवं उसका दुष्प्रभाव	विनोद बिहारी मीणा बुद्धाराम मीणा	292
65.	जलवायु परिवर्तन का संसाधनों पर प्रभाव	बलवंत राज भदावर	294
66.	पर्यावरण असन्तुलन एवं उसका प्रभाव	डॉ. बिजेन्द्र प्रधान डा. अंशु लीला	301

Scanned by CamScanner

पर्यावरण असन्तुलन एवं उसका प्रभाव

डॉ. बिजेन्द्र प्रधान
सहायक आचार्य
समाजकार्य विभाग
जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय, लाडनूं

डा. अंशु लीला
सहायक आचार्य
आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय
जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय, लाडनूं

आज सम्पूर्ण विश्व के समक्ष सबसे बड़ी परेशानी का कारण पर्यावरण में असन्तुलन है इसका कारण मानव की अत्यधिक भोगवादी जीवन शैली है। संसाधन या प्रकृति के अनियमित दोहन के कारण पर्यावरण में असन्तुलन पैदा हुआ है। पर्यावरण के संरक्षण से देश और समाज का भविष्य जुड़ा हुआ है। प्रस्तुत लेख में पर्यावरण में असन्तुलन को केन्द्रित किया गया है।

पर्यावरण का तात्पर्य है कि वह वातावरण जिससे सम्पूर्ण जगत या ब्रह्माण्ड या जीव जगत घिरा हुआ है या दूसरे रूप में हम इसे परिचालित भी करते है और स्वयं भी प्रभावित होते है। मानव विकास के दौड़ में अपने स्वार्थ के कारण पर्यावरण पर पड़ रहे कुप्रभाव को भूलता जा रहा है। जिसके कारण वह विभिन्न प्रकार के गम्भीर बीमारियों से प्रभावित होता जा रहा है।

पर्यावरण का सीधा संबंध प्रकृति से है। हमारे आस–पास जो भी जीव–जन्तु, पेड़–पौधे तथा अन्य सजीव या निर्जीव वस्तुए हैं वे सभी मिलकर पर्यावरण की रचना करते है। इसलिए स्कूली शिक्षा में भी पर्यावरण शिक्षा अनिवार्य कर दिया गया है। पर्यावरण को स्वच्छ एवं साफ रखने में समाज के प्रत्येक व्यक्ति (जनमानस) को जागरूक होना आवश्यक है। मानव अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु पौधों, जीवों, वायु, जल तथा भूमि पर निर्भर रहता है और यदि ये सभी प्रदूषित होंगे तो मानव को जीवन–यापन करने में परेशानी होगी। उदाहरणार्थ "मानव और वृक्ष का अति घनिष्ठ सम्बन्ध है एक–दूसरे के बिना वह अलग नहीं रह सकते क्योंकि वृक्ष मनुष्य को आक्सीजन देता है और मनुष्य इसके बदले में कार्बन–डाइ–आक्साइड गैस लेता है जिसके बिना दोनों में कोई भी जीवित नहीं रह सकता। यदि मानव वृक्ष को काटता है तो इसका अर्थ है कि वह अपने जीवन को नष्ट कर रहा है।" श्रीमती गिरजा दूबे ने 'हरा पेड़' कविता में उल्लेख किया है –

मनुष्यों में चर्चा हुई, क्या पाया, क्या खो दिया ?
जब यह सुना तो हरा पेड़ रो दिया।
शहरों में धुओं की परतों से लड़ते,
हाँफते हुए मंजिलों की सीढ़ी चढ़ते
जब फेफड़े फूल जाते हैं,
डाक्टर उसे ही हृदय रोग बताते है।

पर्यावरण को प्रदूषण से बचाने के लिए मनुष्य को प्राकृतिक वातावरण का ज्ञान होता है और यह ज्ञान हमारी भारतीय संस्कृति में आरम्भ से ही प्राप्त है। पर्यावरण को प्रदूषण से बचाने के लिए सबसे बड़ा योगदान पेड़–पौधों का है। इसलिए हमारा कर्त्तव्य बनता है कि वृक्षों की रक्षा करें और हम वृक्षों को अधिक से अधिक लगायें। वृक्ष सूर्य के प्रकाश को पृथ्वी पर सीधे आने से रोकते हैं जिससे जीव–जन्तु सुरक्षित रह सकें। पेड़–पौधे हमारे आस–पास के वातावरण को भी स्वच्छ रखने में मदद करता है। पर्यावरण की शिक्षा सभी उम्र के लोगों को दी जानी

Scanned by CamScanner

चाहिए और यह मानवीय सुरक्षा के लिए अत्यन्त आवश्यक भी है। लक्ष्मी कुमार ने हम और हमारा पर्यावरण में लिखा है –

"कॉप रहा है अम्बर धरणी, धू–धू धधक रही है।
अभिशापों से त्रस्त, विफल कुण्ठित हो रही है।।
मंगलकारी जंगल में हैं होते नित्य अमंगल।
फटते नित असहाय विटप दुषित होते वायु जल।।"

तेजी से बढ़ती जनसंख्या एवं प्रदूषित वातावरण की विषम परिस्थितियों ने देश को ऐसी स्थिति में लाकर खड़ा कर दिया है कि व्यक्ति को स्वस्थ एवं सन्तुलित जीवन जीना मुश्किल हो गया है। इसका प्रभाव स्वास्थ्य, संस्कृति और समाज पर नकरात्मक पड़ रहा है। इसलिए पर्यावरण को प्रदूषित होने से बचाने के लिए जनसंख्या वृद्धि पर भी नियत्रंण रखना जरूरी है।

कार्ल मार्क्स ने लिखा है कि किसी भी समाज के अस्तित्व व निरन्तरता के लिए दो प्रकार के उत्पादन शर्त है– एक तो मनुष्य को जीवित रहने के लिए आवश्यक वस्तुओं का उत्पादन और दूसरा बच्चों का उत्पादन। मनुष्य अगर जीवित रहेगा तभी इतिहास का निर्माण कर सकेगा और जीवित रहने के लिए भोजन, कपड़ा व मकान आदि आधारभूत चीजों का उत्पादन आवश्यक है साथ मनुष्य चूँकि मरणशील है, इसलिए मरने वालों का जगह लेने के लिए बच्चों का उत्पादन भी आवश्यक है जिससे समाज की निरन्तरता बनी रहे।

मानव स्वार्थवश हमेंशा उन वस्तुओं का उत्पादन किया है जो उसके हित में अधिक तथा प्रकृति के हित में कम हैं। जैसे पॉलीथीन का निर्माण करना मानव के हित में उपयोगी हो सकता है। प्रकृति के लिए हानिकारक ही सिद्ध हो रहा है क्योंकि पॉलीथीन एक ऐसा उत्पाद है जो "जैवकी अपघट्य" नहीं है जो वर्षो तक प्रकृति में बना रहता है और जो मृदा की उर्वरता, जलस्तर, पशुओं के जीवन, वातावरण को प्रभावित करता है। बढ़ती जनसंख्या के कारण इसका उपयोग भी ज्यादा लोगों द्वारा अधिक मात्रा में किया जा रहा है जिससे पर्यावरण पर बुरा प्रभाव पड़ रहा है और दूषित पर्यावरण मानव को दूषित कर अस्वस्थ कर रहा है।

पर्यावरण संरक्षण की दिशा में सरकार ने पालीथीन का उपयोग बंद करने का एक सराहनीय कदम उठाया है पर इस संदर्भ में सरकार द्वारा कानून बनाना ही पर्याप्त नहीं है। आवश्यकता इस बात की है कि इस समस्या के प्रति सामान्य नागरिक भी जागरूक हों और इसका ऐसा विकल्प खोजा जाय जिससे पर्यावरण को नुकसान भी न पहुँचे, वन और पेड़ भी संरक्षित रहे, नालियों व सीवर न जाम हो, जल स्तर न प्रभावित हो, बीमारियाँ न फैले तथा हमारी आवश्यकता की पूर्ति भी हो सके।

पॉलिथीन के विकल्प के रूप में कागज, जूट व कपड़े से बने बैग तथा बॉस के बने उत्पाद उपयोग में लाकर हम पर्यावरण के संरक्षण में योगदान दे सकें। हम अपने छोटे–छोटे प्रयासों के द्वारा प्रकृति एवं वातावरण के सन्तुलन में अपना योगदान दे सकते हैं।

वर्तमान समय में बड़े–बड़े उद्योगों की स्थापना, वृक्षों का कटाव, धुँआयुक्त वाहनों की अधिकता, कूड़ा–करकट का उचित प्रबन्धन का न होना, पॉलिथीनों का उत्पादन एवं उपयोग, अज्ञानता, रूढ़िवादिता आदि हमारे वातावरण को प्रदूषित करने में अहम् भूमिका अदा कर रहे हैं।

इसके अतिरिक्त भी वातावरण प्रदूषण के कई प्रकार होते हैं। जैसे– जल प्रदूषण, वायु प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण, भूमि प्रदूषण आदि जिसको प्रदूषित करने में मानव का ही अधिकतम योगदान होता है। क्योंकि मानव अपने

Scanned by CamScanner

लाभ के लिए कोयला–पेट्रोल का ज्यादा उपयोग करता है, तेज ध्वनि वाले यन्त्र का प्रयोग करता है, बमों को बनाता और फोड़ता है, वनों का कटाव करता है, उद्योगों की स्थापना करता है आदि। हो सकता है वह जानबूझ कर करता हो या अज्ञानता के कारण करता हो। लेकिन हमारा पर्यावरण उससे दूषित होता है या उसका प्रभाव किसी न किसी प्रकार हमारे ऊपर पड़ता है।

इसके अतिरिक्त विभिन्न प्रकार के दूषित वातावरण का प्रभाव निम्नलिखित पर भी पड़ता है:– पानी का स्तर घटना, जंगली जानवरों का विनाश, जमीन से उत्पादन का घटना, युद्ध वातावरण में कमी, बाढ़ की सम्भावना बढ़ना, मृत्युदर एवं विकलांगता में वृद्धि होना, बीमारियों का बढ़ना आदि। सत्यदेव शास्त्री ने हमारा पर्यावरण में लिखा है –

उन्नति यह कैसी आई, प्रदूषण ने धूम मचाई।
पर्यावरण का बोला बाला, हरियाली का पी गया प्याला।।
कर दिया भूमि का नाश, वन उपवन का किया विनाश।
उपज हुई प्रदूषण भारी, साकार लग रही है बीमारी।।
वायुमण्डल गूंज रहा है, ध्वनि प्रदूषण से जूझ रहा है।
वाहनों का हो रहा शोर, प्रदूषण बढ़ रहा घनघोर।।

पर्यावरण में असन्तुलन से उत्पन्न हो रहे कारकों का प्रभाव, मानव जीवन के हर क्षेत्र में पड़ रहा है चाहे वह जल हो, जंगल हो, जमीन हो, वातावरण हो, स्वास्थ्य हो या गम्भीर बीमारियाँ हो आवश्यक है सभी को मिलकर वातावरण को सन्तुलित करना जिससे इसके पड़ने वाले प्रभावों को कम किया जा सके। जरूरत है विभिन्न प्रकार के सेमिनार, कार्यशाला, गोष्ठी, रैली, नुक्कड़ नाटक आदि द्वारा लोगों को जागरूक किया जाय जिससे वे अपना योगदान पर्यावरण सन्तुलन बनाने में दे सकें।

Scanned by CamScanner